हंसता हुआ धर्म

मुल्ला नसरुद्दीन डट के शराब पी रहा था। और किसी ने कहा, नसरुद्दीन तुमको मैंने कुरान भी पढ़ते देखा है और तुम शराब भी पीते हो, शर्म नहीं आती? नसरुद्दीन, कुरान के अनुसार ही शराब पी रहा हूं। कुरान में वचन साफ है कि जितनी पीनी हो शराब पी लो। उस आदमी ने कहा, वह मुझे मालूम है लेकिन आगे? यह तो आधा वचन है। आगे लिखा है कि लेकिन परिणाम के लिए तैयार रहना, नरक की अग्नि में सड़ोगे। मुल्ला ने कहा, अभी जितनी हैसियत है उतना कर रहा हूं। अभी पूरी करने की हैसियत नहीं। मान तो कुरान को ही रहा हूं।

मुल्ला नसरुद्दीन अपने पड़ोसी मित्रों की जिद पर एक बार शास्त्रीय संगीत सुनने गया। मुल्ला ने कहा भी उनसे की उसे संगीत से कुछ लेना-देना नहीं लेकिन पड़ोसी उसे अपने साथ घसीट के ले ही गए। जैसे ही कार्यक्रम शुरू हुआ और संगीतज्ञ आलाप भरने लगा, तो मुल्ला के आंखों से एकदम टप-टप आंसू गिरने लगे। मित्रों ने कहा, अरे नसरुद्दीन, हमने तो सोचा भी नहीं था कि तुम शास्त्रीय संगीत के ऐसे प्रेमी हो! हमारी आंखें गीली नहीं हुईं और तुम्हारी आंखों से टप-टप आंसू गिर रहे हैं!

मुल्ला नसरुद्दीन बोला, शास्त्रीय संगीत की ऐसी की तैसी। यह आदमी मरेगा! ऐसे ही आऽऽ आऽऽ आऽऽ करते मेरा बकरा मर गया था। इसका इलाज करो भाईयों, क्या बैठे आऽऽ आऽऽ आऽऽ सुन रहे हो! आंसू मेरे गिर रहे हैं और यह बेचारा, इसकी पत्नी होगी, बाल-बच्चे होंगे, ये तो अब गया काम से। इसी को तुम शास्त्रीय संगीत कहते हो?

एक गांव में एक धर्मगुरु आए। मुल्ला नसरुद्दीन भी सुनने गया। धर्मगुरु का उपदेश था कि दूसरों के जीवन में व्यावधान डालना हिंसा है। प्रवचन के बाद मुल्ला मंच पर पहुंचा, बोला, मैं आपको एक बढिया लतीफा सुनाता हूं, जरा गैर से सुनिए। लतीफा चार खंडों में है।

पहला खंडः एक सरदार जी साइकिल पर अपनी बीवी को बिठा कर कहीं जा रहे थे। रास्ते में गड्ढा आया, बीवी चिल्लाई, जरा बच कर चलना! सरदार जी ने साइकिल रोकी और उतर कर बीवी को एक झापड़ मार कर कहा, साइकिल मैं चला रहा हूं कि तू?

धर्मगुरु बोले, सही बात है, किसी के काम में अड़ंगा नहीं डालना चाहिए।

मुल्ला ने आगे कहा, जरा सुनिए दूसरा खंड। सरदार जी घर आए। बीवी चाय बनाने बैठी। गुस्से में तो थी ही, स्टोव में खूब हवा भरने लगी। सरदार जी बोले, देखो, कहीं स्टोव की टंकी न फट जाए! बीवी ने दाढ़ी पकड़ के सरदार जी को एक चांटा लगाया। बोली, चाय मैं बना रही हूं या तुम?

धर्मगुरु बोले, वाह-वाह, क्या चुटकुला है! किसी के काम के बीच में बोलना ही नहीं चाहिए।

मुल्ला ने आगे कहना जारी रखा। कहा, सुनिए, अब चौथा खंड। एक बार सरदार जी...।

धर्मगुरु ने बीच में टोका, अरे भाई, पहले तीसरा तो सुनाओ। दूसरे के बाद यह चौथा खंड कैसे आ गया?

नसरुद्दीन ने आव देखा न ताव, भर ताकत एक घूंसा धर्मगुरु की पीठ पर लगाया और बोला, चुटकुला मैं सुना रहा हूं कि तुम?

मुल्ला नसरुद्दीन लखनऊ के एक नवाब का नौकर था। शुरूआत तो छोटी नौकरी से हुई थी लेकिन चमचागिरी में कुशल था सो जल्द ही वह नवाब के अंतरंग लोगों में शामिल हो गया। वह नवाब का ऐसा अंतरंग बन गया कि नवाब उसके बिना कहीं नहीं आता जाता। उसका उठना-बैठना, खाना-सोना सब मुल्ला के साथ ही होता। एक दिन दोनों खाना खाने बैठे, उस दिन भिंडी की सब्जी बनी थी। नवाब को सब्जी बहुत पसंद आयी। नवाब ने मुल्ला से कहा कि ये भिंडी तो बड़ी गजब की चीज है! मुल्ला ने कहा, क्यों न हो! अरे भिंडी के संबंध में तो शास्त्रों में लिखा है कि अमृत है भिंडी, कि हजार रोग की एक दवा है भिंडी, कि बूढ़ा खाए तो जवान हो जाए, कि कहानियां तो यहां तक हैं कि मुर्दों ने खाई तो जिंदा हो गए! जितना झूठ बोल सकता था भिंडी के संबंध में, बोला। रसोइए ने भी सुन लिया कि भिंडी तो अद्‌भुत चीज है, और नवाब ने भी माना। रसोइया अब रोज भिंडी बनाने लगा।

दो-तीन दिन तक तो नवाब कुछ न बोला लेकिन फिर उसको परेशानी होने लगी। सातवें दिन अपनी थाली में भिंडी देखा उसने तो गुस्से में थाली फेंक दी। कहा, यह क्या मचा रखा है? क्या मुझे मारोगे? भिंडी, भिंडी, भिंडी!

मुल्ला नसरुद्दीन एकदम आगबबूला हो गया, उसने अपनी भी थाली फेंक दी। उसने कहा, यह रसोइया पागल है। अरे भिंडी जहर है! शास्त्रों में तो साफ लिखा है कि जवान खाएं तो बूढ़े हो जाएं; और बूढ़े खाएं कि मरे। बच्चों ने खाई है, उनके बाल सफेद हो गए हैं।

नवाब ने कहा, अरे नसरुद्दीन, सात दिन पहले तो तुम कुछ और कहते थे! नसरुद्दीन ने कहा, मालिक, मैं आपका गुलाम हूं, भिंडी का नहीं। मैं तनख्वाह आपसे पाता हूं भिंडी से नहीं। मुझे भिंडी से क्या लेना-देना? आप जिसमें खुश, मैं उसमें खुश।